The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 10 | October 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

भारतीय परम्परा का विकास एवं गोदना कला : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

घनेन्द्र कुमार वर्मा

स्वतंत्र चित्रकार

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17637776

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 27-10-2025

Published: 10-11-2025

Keywords:

गोदना, आदिवासी कला, सांस्कृतिक परंपरा, भारतीय कला, जनजातीय समुदाय, सांस्कृतिक धरोहर, लोक कला।

ABSTRACT

गोदना कला भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का एक प्राचीन और महत्वपूर्ण अभिन्न अंग है, जो मुख्य रूप से भारत के उत्तरी और मध्य भागों की आदिवासी समुदायों द्वारा अभ्यास की जाती है। यह शोध आलेख गोदना कला के विकास, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक महत्व, और समकालीन परिस्थितियों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। पुरातात्विक साक्ष्य और मिथोलॉजिकल आख्यानों के माध्यम से, हम यह समझते हैं कि गोदना केवल एक सौंदर्य कला नहीं है, बल्कि यह आदिवासी समुदायों की पहचान, आध्यात्मिकता, सामाजिक स्थिति, और सांस्कृतिक निरंतरता का प्रतीक है। गोंड, बैगा, भील, संथाल और डोसाध जनजातियों में गोदना की परंपरा महिलाओं के जीवन के विभिन्न चरणों को चिह्नित करती है– बचपन, युवावस्था, विवाह, और मातृत्व। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक, इस कला ने अपना विकास किया है और विभिन्न सामाजिक–राजनीतिक संदर्भों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालांकि, आधुनिकीकरण, शहरीकरण, और वैश्विक सांस्कृतिक प्रभाव के कारण यह परंपरा लुप्त होने के कगार पर है। यह आलेख गोदना कला के संरक्षण, इसके सांस्कृतिक महत्व की पुनः स्वीकृति, और भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के रूप में इसके पुनरुद्धार के महत्व को रेखांकित करता है। समकालीन चुनौतियों के बावजूद, गोदना कला आदिवासी महिलाओं के लिए आय का स्रोत, सांस्कृतिक पहचान का माध्यम, और सामुदायिक एकता का प्रतीक बनी हुई है।

1. परिचयः–

भारत विविध सांस्कृतिक परंपराओं, कलाओं, और लोक विद्याओं का भंडार है जो हजारों वर्षों से सामाजिक, आध्यात्मिक, और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा करती आई हैं। इन समृद्ध परंपराओं में से एक हैकृगोदना

कला, जो शरीर पर सुइयों, बांस की तीलियों और प्राकृतिक रंगों का प्रयोग करके विभिन्न डिजाइन और पैटर्न बनाई जाती है। हिंदी में श्गोदनाश शब्द की व्याख्या श्सुई को गाड़नाश या 'तीक्ष्ण वस्तु से छेदना' के रूप में की जा सकती है। यह कला न केवल भारत में बल्कि विश्व की अनेक संस्कृतियों में प्राचीन काल से प्रचलित है, परंतु भारतीय आदिवासी समुदायों में यह एक जीवंत, गतिशील और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक परंपरा बनी हुई है।

गोदना कला मुख्य रूप से भारत के उत्तरी और मध्य क्षेत्रों में पाई जाती है, विशेषकर मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, राजस्थान, और पूर्वोत्तर भारत के आदिवासी क्षेत्रों में। गोंड, बैगा, भील, संथाल, मुंडा, डोसाध, और अन्य जनजातीय समुदायों में इस परंपरा का विशेष महत्व है। गोदना केवल एक सौंदर्य कला नहीं हैय यह एक जटिल सांस्कृतिक प्रणाली है जो आदिवासी समुदायों की दार्शनिकता, सामाजिक संरचना, आध्यात्मिक विश्वास, और जीवन के विभिन्न चरणों को प्रतिबिंबित करती है।

2. गोदना कला का ऐतिहासिक विकास

- **प्राचीन काल में गोदनाः–**

गोदना कला के इतिहास की खोज करते समय हम पाते हैं कि इसकी जड़ें मानव सभ्यता के प्रारंभिक काल में निहित हैं। भारत में 10,000 साल पुराने शैल चित्रों में शरीर पर कलात्मक निशानों का प्रमाण मिलता है, जो संकेत देते हैं कि आदिवासी समुदायों ने प्राचीन काल में ही अपने शरीर को कलाकृति के रूप में सजाने की परंपरा विकसित कर ली थी। मध्य भारत के विभिन्न क्षेत्रों में खोजे गए ये प्राचीन शैल चित्र (Rock paintings) आधुनिक गोदना कला के सबसे महत्वपूर्ण पुरातात्विक साक्ष्य हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता (3300–1300 ईसा पूर्व) के काल में भी गोदना कला के निशान मिलते हैं। खोदाई में प्राप्त मूर्तियों और मुहरों पर महिला आकृतियों पर विस्तृत शरीर सज्जा के चिन्ह अंकित हैं। विशेषकर भारतीय पुरातत्व में बहुत महत्वपूर्ण भारहुत स्तूप से प्राप्त 200 ईसा पूर्व की महिला मूर्तियों पर हाथों, पैरों, और चेहरे पर गोदना के स्पष्ट निशान दिखाई देते हैं। ये साक्ष्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि गोदना न केवल आदिवासी संदर्भ तक सीमित नहीं था, बल्कि प्राचीन भारतीय सभ्यता के विभिन्न स्तरों में इसका प्रचलन था।

वेदिक और पौराणिक साहित्य में, यद्यपि गोदना का प्रत्यक्ष उल्लेख सीमित है, तथापि शरीर पर विभिन्न प्रकार की कलात्मक निशानियों का वर्णन मिलता है। यह माना जाता है कि ये निशानियां गोदना कला के प्रारंभिक रूप ही थीं। पौराणिक ग्रंथों में भी कई देवी–देवताओं के शरीर पर विशेष चिन्हों का वर्णन है, जो गोदना के समकालीन स्वरूप को दर्शाते हैं।

- **मध्यकालीन भारत में गोदनाः—**

मध्यकालीन भारत में गोदना परंपरा अधिक स्पष्ट और विस्तृत रूप से देखने को मिलती है। इस काल में गोदना विभिन्न आदिवासी और ग्रामीण समुदायों में गहरी जड़ें जमा चुकी थी। विभिन्न जनजातीय समुदायों ने गोदना को पहचान, सामाजिक स्थिति, और आध्यात्मिक संरक्षण के माध्यम के रूप में विकसित किया था। इस समय गोदना कला में विभिन्न प्रतीकों, ज्यामितीय आकृतियों, और धार्मिक मोटिफों का विकास हुआ, जो विशेष सांस्कृतिक और सामाजिक अर्थों को व्यक्त करते थे।

3. **गोदना कला पौराणिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमिः—**

- **शिव और पार्वती की कथा**

गोदना परंपरा से जुड़ी सबसे प्रसिद्ध पौराणिक कथा भगवान शिव और माता पार्वती से संबंधित है। एक प्रसिद्ध मिथोलॉजिकल आख्यान के अनुसार, भगवान शिव ने देवताओं को एक भव्य भोज दिया। इस भोज के दौरान, गोंड देवता ने गलती से माता पार्वती को अपनी पत्नी समझकर उनके चारों ओर अपनी बाहें डाल दीं। इस अपमान से क्रुद्ध होकर माता पार्वती ने क्रोध में यह आदेश दिया कि सभी आदिवासी (गोंड) महिलाओं को अपने शरीर पर गोदना करवाना चाहिए ताकि वे आसानी से एक—दूसरे से अलग पहचानी जा सकें। इस दिव्य आदेश को मान्यता देते हुए आदिवासी समुदायों ने गोदना को अपनी सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न अंग बना लिया।

एक अन्य पौराणिक कथा के अनुसार, भगवान शिव और माता पार्वती की असीम शक्तियों से प्रभावित होकर, वे आदिवासी समुदायों को गोदना कला का उपहार दिए ताकि उन्हें सुंदरता, संरक्षण, और सामाजिक पहचान प्राप्त हो सके। इस कथा में यह भी कहा जाता है कि भगवान शिव ने स्वयं बैगा महिलाओं को गोदना कला सिखाई, और उन्हें गोदना के माध्यम से अलौकिक शक्तियों से संरक्षण का वरदान दिया।

- **यमराज और परलोक का महत्व**

गोदना परंपरा में एक अन्य महत्वपूर्ण विश्वास यह है कि गोदना मृत्यु के बाद भी व्यक्ति के साथ रहता है। गोंड जनजाति की वरिष्ठ महिलाएं कहती हैं कि जब यमराज किसी आत्मा को लेने आते हैं, तो गोदना का उपयोग महिला को उसके पति से अलग करने में मदद करता है और परलोक में भी व्यक्तिगत पहचान बनाए रखने में सहायक होता है। इस विश्वास के अनुसार, गोदना केवल जीवन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आत्मा के साथ परलोक की यात्रा करता है।

एक अन्य महत्वपूर्ण कथा में कहा गया है कि मृत्यु के बाद, जब आत्मा देवताओं के सामने प्रस्तुत होती है, तो उसे गोदना से संबंधित एक पहेली को हल करना होता है। यदि आत्मा इस पहेली को सफलतापूर्वक हल नहीं

कर पाती, तो उसे पुनः पृथ्वी पर जन्म लेना पड़ता है। यह मिथोलॉजिकल विश्वास गोदना के आध्यात्मिक महत्व और सांस्कृतिक गहराई को प्रदर्शित करता है।

4. विभिन्न जनजातीय समुदायों में गोदना

- **गोंड जनजाति में गोदनाः–** गोंड जनजाति छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश की सबसे बड़ी आदिवासी जनजातियों में से एक है। गोंड समुदाय में गोदना परंपरा सबसे अधिक विकसित और जीवंत रही है। गोंड समुदाय में लड़कियों को आमतौर पर 8–10 वर्ष की आयु में पहली बार गोदना करवाया जाता है। प्रारंभिक गोदना मुख्यतः माथे, गर्दन, और भुजाओं पर किया जाता है। समय के साथ, जीवन के विभिन्न चरणों में नए मोटिफ जोड़े जाते हैं। गोंड समुदाय में गोदना की परंपरा को बैडी और बडनिन (Badi and Badnin) कहलाने वाली विशेष जातियों द्वारा संभाला जाता है। बडनिन महिलाएं ही गोदना कलाकार होती हैं और इस कला को पीढ़ियों से विरासत में प्राप्त करती हैं। वे प्राकृतिक रंगों का उपयोग करते हैं, जो राजतिल (Niger seeds) के बीजों को पीसकर बनाए जाते हैं। गोंड समुदाय में गोदना के विभिन्न मोटिफों का अपना विशेष महत्व है। उदाहरण के लिए, तारकाओं और ज्यामितीय आकृतियों के पैटर्न विभिन्न आध्यात्मिक शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, पशु और पक्षियों के आकार प्रकृति से संबंध को दर्शाते हैं, और धार्मिक प्रतीक महिला की आध्यात्मिकता को व्यक्त करते हैं।
- **बैगा जनजाति में गोदनाः–** मध्य प्रदेश की बैगा जनजाति गोदना परंपरा के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध है। बैगा समुदाय में गोदना केवल एक सौंदर्य कला नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक पहचान का अनिवार्य अंग है। बैगा महिलाएं अपने शरीर पर इतने व्यापक गोदना करवाती हैं कि उनके पूरे शरीर की सतह गोदना से ढकी रहती है। बैगा समुदाय में विश्वास है कि गोदना के बिना कोई महिला पूर्ण नहीं मानी जाती। बैगा समुदाय में पहली बार गोदना आमतौर पर 9–10 वर्ष की आयु में किया जाता है, जब लड़की माथे पर गोदना करवाती है। इसके बाद, जैसे–जैसे लड़की बड़ी होती है, नए–नए मोटिफ जोड़े जाते हैं। बैगा समुदाय की महिलाओं का विश्वास है कि ये गोदना के निशान ही एकमात्र ऐसी संपत्ति हैं जो कब्र तक साथ रहती है। बैगा समुदाय में गोदना की प्रक्रिया जंगलों में की जाती है क्योंकि बैगा पुरुषों का विश्वास है कि महिला के रक्त को देखना अशुभ होता है और शिकार के समय बुरी किस्मत ला सकता है। इस संदर्भ में, गोदना की प्रक्रिया घर से दूर, जंगल में, महिलाओं की गोपनीयता को बनाए रखते हुए की जाती है।
- **भील जनजाति में गोदनाः–** राजस्थान, गुजरात, और मध्य प्रदेश में पाई जाने वाली भील जनजाति में भी गोदना की परंपरा बेहद महत्वपूर्ण है। भील समुदाय में गोदना मुख्यतः महिलाओं द्वारा किया जाता है, हालांकि कुछ विशेष अवसरों पर पुरुष भी गोदना करवाते हैं। भील महिलाओं के गोदना के डिजाइन मुख्यतः ज्यामितीय आकृतियों, पशु–पक्षियों, और प्रकृति के प्रतीकों पर आधारित होते हैं।
- **संथाल और डोसाध जनजाति में गोदनाः–** बिहार, झारखंड, और पूर्वोत्तर भारत में पाई जाने वाली संथाल जनजाति में गोदना परंपरा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संथाल महिलाएं गोदना को अपने जीवन के

विभिन्न महत्वपूर्ण चरणों के संकेत के रूप में उपयोग करती हैं। डोसाध जनजाति, जो बिहार के जितवारपुर गांव में रहती है, ने 1970 के बाद से गोदना कला को गोदना पेंटिंग में रूपांतरित किया है। जर्मन मानवविज्ञानी एरिका मोजर की प्रेरणा से, डोसाध समुदाय ने गोदना कला को पेंटिंग के माध्यम में परिवर्तित किया, जिससे यह कला विलुप्त होने से बची और आय का नया स्रोत भी बन गई।

5. **गोदना के जीवन चक्र में महत्वः–**

गोदना कला को आदिवासी समुदायों में महिलाओं के जीवन के विभिन्न चरणों का प्रतीक माना जाता है, जिसे 'rites of passage' (जीवन के संस्कार) के रूप में देखा जा सकता है। प्रत्येक गोदना का विशेष समय और विशेष अर्थ है।

- **बचपन का गोदनाः** लड़कियों को आमतौर पर 8–10 वर्ष की आयु में पहली बार गोदना करवाया जाता है। यह गोदना आमतौर पर माथे पर किया जाता है और इसे 'कारेलचानी' (Karelachani) कहा जाता है। यह गोदना बचपन से जीवन की यात्रा के प्रारंभ का संकेत है।
- **किशोरावस्था का गोदनाः** जब लड़की किशोरावस्था में प्रवेश करती है, तो विशेष गोदना उसके माथे, गर्दन, और भुजाओं पर किए जाते हैं। ये गोदना 'मछीमुड़ी' (Machhimudi) कहलाते हैं और यह महिला परिपक्वता का प्रतीक हैं।
- **विवाह का गोदनाः** विवाह से पहले और विवाह के समय, विशेष गोदना किए जाते हैं। विवाह के समय के गोदना को 'छाती गोदना' या 'पैर का गोदना' कहा जाता है, जो महिला की विवाहित स्थिति को दर्शाता है और पति के परिवार से उसके संबंध को प्रतीकात्मक रूप से व्यक्त करता है।
- **मातृत्व का गोदनाः** जब कोई महिला माता बनती है, तो उसके शरीर पर विशेष गोदना किए जाते हैं जो मातृत्व को चिह्नित करते हैं। ये गोदना प्रजनन क्षमता, जीवन देने की शक्ति, और माता–बच्चे के संबंध का प्रतीक होते हैं।

6. **गोदना के डिजाइन और मोटिफों का प्रतीकात्मक अर्थः–**

गोदना के विभिन्न डिजाइन और पैटर्नों का गहरा सांस्कृतिक और आध्यात्मिक अर्थ है। प्रत्येक मोटिफ एक विशेष भावनात्मक, सामाजिक, या आध्यात्मिक संदेश को व्यक्त करता है।

ज्यामितीय आकृतियांः त्रिभुज, वर्ग, और आठ भुजाओं वाली आकृतियां महिला शक्ति, ब्रह्मांड, और दिव्य सुरक्षा का प्रतिनिधित्व करती हैं। आठ भुजाओं वाली आकृति के केंद्र में कमल को दर्शाया जाता है, जो लक्ष्मी (धन और समृद्धि की देवी) का आसन है और संपूर्ण ब्रह्मांड का प्रतीक भी है।

पशु–पक्षीः चिड़िया, मछली, हिरण, और अन्य जानवरों के आकार प्रकृति से जुड़ाव, प्रजनन शक्ति, और पर्यावरण से हार्मनी को प्रदर्शित करते हैं। मछली के आकार को 'मछीमुड़ी' कहा जाता है और यह विशेष रूप से विवाह के समय अंकित किया जाता है।

सूर्य और चंद्रमाः सूर्य को पुरुष शक्ति और चंद्रमा को महिला शक्ति का प्रतीक माना जाता है। चंद्रमा को 'रक्तिपति' (King of the Night) या 'पति' (husband) भी कहा जाता है, जो महिला के विवाह के बाद पति की सुरक्षा का प्रतीक है।

धार्मिक प्रतीकः भगवान कृष्ण के मोटिफ, जैसे शंख (Conch), चक्र (Wheel), गदा (Mace), और कमल (Lotus), आध्यात्मिक सुरक्षा, दैवीय आशीर्वाद, और महिला की सांस्कृतिक पहचान को व्यक्त करते हैं।

फूल और पत्तियांः विभिन्न फूलों और पत्तियों के आकार सौंदर्य, प्रकृति से जुड़ाव, और जीवन की नवीनता को प्रदर्शित करते हैं।

7. गोदना कला की तकनीकी प्रक्रियाः–

गोदना कला के निर्माण में परंपरागत तकनीकें और प्राकृतिक सामग्रियों का उपयोग किया जाता है। इस प्रक्रिया में बहुत कौशल, धैर्य, और समय की आवश्यकता है।

- **उपकरणः** गोदना बनाने के लिए सुई, तीक्ष्ण धातु की वस्तुएं, तीलियां, और बांस की सींयों का उपयोग किया जाता है। प्राचीन काल में और अब भी कई क्षेत्रों में, काटों और तीव्र बांस की वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है।
- **रंग और स्याहीः** गोदना में प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है। राजतिल (Niger seeds) के बीजों को पीसकर, गायों के पित्त, सूट (कालिख), और विभिन्न पौधों की राख को मिलाकर स्याही तैयार की जाती है। कुछ क्षेत्रों में, विभिन्न प्रकार के अंगूरों के बीजों को जलाकर भी स्याही बनाई जाती है। तेल के साथ सब्जी के रंगों को मिलाकर भी रंगीन स्याही तैयार की जाती है।
- **प्रक्रियाः** गोदना बनाने की प्रक्रिया बहुत पीड़ादायक है और कई दिनों तक चलती है। पहले, गोदना कलाकार छोटी बांस की तीलियों या सुइयों का उपयोग करके डिजाइन को रूपरेखा देते हैं, फिर तीव्र सुइयों का उपयोग करके त्वचा को छेदते हैं ताकि स्याही त्वचा के अंदर प्रवेश कर सके। प्रक्रिया पूरी होने के बाद, क्षेत्र को गुनगुने पानी से धोया जाता है और गाय के गोबर को लगाया जाता है। घाव को ठीक होने में लगभग एक सप्ताह का समय लगता है।

8. आधुनिक युग में गोदना कला की स्थितिः–

आधुनिकीकरण, शहरीकरण, और वैश्विक सांस्कृतिक प्रभाव के कारण गोदना कला का महत्व कम होता जा रहा है। आधुनिक समय में इस परंपरा को विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। जैसे–जैसे गांवों से

शहरों की ओर पलायन बढ़ रहा है, युवा लड़कियां गोदना परंपरा से दूर हो रही हैं। शहरों में आधुनिक टैटू बनाने की सुविधाएं आसानी से उपलब्ध हैं, और युवा लोग परंपरागत गोदना की बजाय आधुनिक डिजाइन को अधिक पसंद कर रहे हैं।

शिक्षित युवा पीढ़ी को गोदना कला की सांस्कृतिक गहराई और महत्व के बारे में पर्याप्त जागरूकता नहीं है। बहुत से युवा लड़कियां गोदना को पीड़ा, पिछड़ापन, और अधुनिकता के विरुद्ध एक प्रतीक के रूप में देखती हैं। समाज के प्रभावशाली वर्गों द्वारा गोदना को 'जंगली' या 'पिछड़ी' परंपरा माना जाता है, जिससे महिलाएं इस परंपरा को अपनाने में शर्माती हैं। बहुत से समुदायों में, दूसरी जनजातियों के लोगों द्वारा गोदना वाली महिलाओं की उपहास और आलोचना की जाती है।

गोदना कला को सीखने और पारंपरिक तरीके से बनाने में बहुत समय लगता है। आधुनिक समय में, जब महिलाओं के पास तेजी से आय अर्जित करने के अन्य तरीके हैं, तो गोदना कला का अभ्यास कम लाभदायक लगता है। इसके अलावा, गोदना कलाकारों द्वारा ली जाने वाली उच्च कीमत भी महिलाओं को इस परंपरा से दूर करती है। आधुनिक समय में, गोदना बनाने में उपयोग होने वाले उपकरणों और रंगों की स्वच्छता को लेकर चिंताएं बढ़ी हैं। कई महिलाएं और उनके परिवार गोदना प्रक्रिया से संक्रमण या स्वास्थ्य समस्याओं का भय रखते हैं।

9. गोदना कला संरक्षण और पुनरूद्धारः—

हालांकि गोदना कला विलुप्त होने के कगार पर है, लेकिन कई संगठन, कलाकार, और सामाजिक कार्यकर्ता इस महत्वपूर्ण सांस्कृतिक परंपरा को संरक्षित करने के लिए प्रयासरत हैं। डोसाध जनजाति ने गोदना परंपरा को पेंटिंग के माध्यम में परिवर्तित किया है। मंगला बाई मारवी जैसी कलाकारों ने गोदना के पारंपरिक डिजाइनों को कैनवास पर उतारा है, जिससे यह कला जीवंत रह गई है और आय का नया स्रोत भी बन गई है।

गोदना डिजाइनों को डिजिटल रूप में संरक्षित किया जा रहा है। Typecraft Initiative जैसी परियोजनाओं ने गोंड जनजाति की महिलाओं के साथ काम करके गोदना डिजाइनों को टाइपफेस में परिवर्तित किया है। इससे न केवल परंपरागत कलाकारों को आय मिलती है, बल्कि गोदना कला को आधुनिक संदर्भ में भी प्रासंगिक बनाया जाता है। कई शिक्षा संस्थानों और संस्कृति केंद्रों ने गोदना कला को अपने पाठ्यक्रम में शामिल करना शुरू किया है। युवाओं को गोदना कला की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व के बारे में शिक्षित करने के लिए विभिन्न कार्यशाला और प्रदर्शनियों का आयोजन किया जा रहा है।

विभिन्न सांस्कृतिक समारोहों और मेलों में गोदना कला को प्रदर्शित किया जा रहा है। इससे लोगों को गोदना की सुंदरता और सांस्कृतिक महत्व को समझने का अवसर मिलता है। कई राज्य सरकारों ने गोदना कला को सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मान्यता दी है। गोदना कलाकारों को विभिन्न अनुदान और सहायता प्रदान करने के लिए योजनाएं चलाई जा रही हैं।

10. निष्कर्षः—

गोदना कला भारतीय परंपरा का एक अमूल्य और प्राचीन अभिन्न अंग है जो हजारों वर्षों से आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक पहचान, आध्यात्मिकता, और सामाजिक संरचना का प्रतिनिधित्व करती है। पुरातात्विक साक्ष्यों से यह स्पष्ट है कि गोदना परंपरा प्राचीन भारतीय सभ्यताओं का अभिन्न अंग थी, और मध्यकालीन भारत में यह परंपरा अधिक विकसित और जीवंत रही। गोंड, बैगा, भील, संथाल, और अन्य जनजातीय समुदायों में गोदना कला न केवल एक सौंदर्य परंपरा है, बल्कि यह महिलाओं के जीवन के विभिन्न महत्वपूर्ण चरणों को चिह्नित करती है और उन्हें सामाजिक, आध्यात्मिक, और आर्थिक सशक्तिकरण प्रदान करती है।

हालांकि, आधुनिकीकरण, शहरीकरण, और वैश्विक सांस्कृतिक प्रभाव के कारण यह मूल्यवान परंपरा आज विलुप्त होने के कगार पर है। युवा पीढ़ी इस परंपरा से दूर हो रही है, और पारंपरिक कलाकारों के लिए आय के साधन कम होते जा रहे हैं। इसलिए, गोदना कला के संरक्षण और पुनरुद्धार के लिए तत्काल और व्यापक प्रयासों की आवश्यकता है।

सरकार, शैक्षणिक संस्थानों, सांस्कृतिक संगठनों, और समाज के सभी स्तरों को मिलकर गोदना कला को संरक्षित रखने के लिए कार्य करना चाहिए। यह कला न केवल आदिवासी समुदायों के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समस्त भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न अंग है। गोदना परंपरा को संरक्षित रखना, इसे डिजिटल रूप में संग्रहीत करना, पारंपरिक कलाकारों को आर्थिक सहायता प्रदान करना, और युवाओं को इसके महत्व के बारे में शिक्षित करना आवश्यक है।

यदि हम इस मूल्यवान परंपरा को खोना नहीं चाहते, तो हमें अभी से ही गोदना कला के संरक्षण के लिए गंभीर प्रयास शुरू करने चाहिए। गोदना कला भारतीय संस्कृति की एक अनोखी और जीवंत परंपरा है, जो महिलाओं के सशक्तिकरण, सामाजिक पहचान, और सांस्कृतिक निरंतरता का प्रतीक है। इस परंपरा को जीवंत रखना हमारा सामूहिक दायित्व है ताकि आने वाली पीढ़ियां भी इस सुंदर और अर्थवान कला को समझ सकें और उसे अपनाती रहें।

संदर्भ सूचीः

- Singh, Neetu (2015). Godna (Body Tattooing) Tradition of Awadhfrom Mythology to Modernity. *IJELLH*, 3(4), 15-27. http://ijellh.com/papers/2015/June/03-15-27-June-2015.pdf
- Vikas, K. & Mathpal, Rajshree(2025). Negotiating Culture And Identity: Women's Role In Sustaining Godna Art Among The Santhals. International *Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT),* 13(2), 375-383. https://www.ijcrt.org/papers/IJCRT2502165.pdf

- http://indianculture.gov.in/paintings/godna-paintings
- https://en.wikipedia.org/wiki/Godna
- https://mapacademy.io/article/godna/
- https://www.abc.net.au/asia/uncovering-india-ancient-history-of-tattoos/103927384
- https://thebetterindia.com/58170/india-tattoo-tradition-history/
- https://www.ishankhosla.com/work/godna-typeface-made-tribal-tattoos
- https://xtremeinks.com/blogs/artists-corner/tattooing-in-india-a-cultural-canvas-inked-in-tradition-and-modernity
- https://itokri.com/blogs/craft-masala-by-itokri/godna-paintings-origin-history-more
- https://www.mptourism.com/godna-tattoo-paintings-of-madhya-pradesh.html
- https://www.savaari.com/blog/history-and-symbolism-of-tribal-tattoo-india/
- http://intangibleheritage.intach.org/godna-tattoo-art-by-women-of-the-baiga-tribe-of-madhya-pradesh/
- http://indiantribalzone.blogspot.com/2015/10/tattoo-art-of-baiga-tribe.html
- https://larskrutak.com/india-land-of-eternal-ink/